Research Review
The Refereed & Peer Review International Journal
www.researchreviewonline.com

ISSN : 2321- 4708
Apr 2019, Year - 5 (72)
Paper ID : RRJ000061

संस्कृत सुभाषित और उनका विकास

: संशोधक :

डॉ. शारदा विनुभाई राठोड

प्राध्यापक, संस्कृत विभाग,

श्री आर. आर. लालन कोलेज, भुज (गुजरात)

प्राचीन संस्कृत साहित्य हमें प्राचीन कवियों की अमूल्य देन है । प्राचीन संस्कृत साहित्य बहुत व्यापक है जिसमें हमें बहुत कुछ जानने या सिखने को मिलता है । संस्कृत साहित्य में कई जगह पर ऐसी रचनाएँ भी है जो हमें जीवन जीने के लिये प्रेरणा भी देती है । संस्कृत के प्राचीन सुभाषितग्रंथों की सहायता से हम उनके कवियों के विषय में जान सकते है, जिसने स्वतन्त्र ग्रन्थों की रचना न की हो परन्तु सूक्ति याँ सुभाषितों का संकलन किया हो जैसे कि सदुक्तिकर्णामृत । सदुक्तिकर्णामृत जैसे अन्य कई सुभाषितग्रन्थों भी है जिनसे हमे प्राचीन कवियों एवं उनके विषय में कुछ जान सकते है । यहाँ संस्कृत के प्राचीन सुभाषितकारों एवं उनके ग्रन्थ सम्बन्धित चर्चा की है ।

सुभाषित रत्नकोश :

सुभाषितरत्नकोश एक सुभाषितों का समूह है । इस कोश का प्रकाशन कवीन्द्रवचनसमुच्चय' नाम से इ.स. १९१२ में कलकत्ता में हुआ है जिसके प्रधान संपादक टोमस थे । यह ग्रन्थ पहले अपूर्व था लेकिन बाद में इस ग्रन्थ का संकलन ई.स. ११०० में श्री विधाधर पण्डित ने किया जो पूर्व बंगाल में मालदा जिल्ले के जगदल विहार के मान्य एवं लब्धप्रतिष्ठ आचार्य थे । इनके सहयोग से फिर से बुद्धाकर गुप्त एवं भीमार्जुन सोम ने ई.स. ११३०में इस ग्रन्थ का पुनःसंस्करण किया ।

इस ग्रन्थ का समय भोज के समय के बाद होना चाहिए क्योंकि भोज का समय इ.स. १००५ से इ.स. १०५४ है और इस ग्रन्थ में भोज के कई पधों का संकलन भी किया गया है । प्रस्तुत ग्रन्थ में कुल ५० व्रज्या (विभाग) है जिसमें श्लोकसंख्या १७३९ है ।

शार्ङ्गधरपद्धति :

प्रस्तुत ग्रंथकर्ता 'शार्ङ्गधर' है । शाकम्भरी देशाधिपति चौहाणवंशी राजा हम्मीर के मुख्य सभापण्डित राघवदेव थे । राघवदेव के तीन पुत्र थे – गोपाल, दामोदर और देवदास, दामोदर के तीन पुत्र शार्ङ्गधर, लक्ष्मीधर एवं कृष्ण थे। शार्ङ्गधर द्वारा संकलित यह सूक्तिसंग्रह को 'शार्ङ्गधरपद्धति' के नाम से जाना जाता है ।

'शार्ङ्गधरपद्धति' ग्रन्थ में १६३ परिच्छेद एवं ६३०० पधों का संग्रह है, जिसमें हाल प्राप्य ग्रन्थ में परिच्छेद की संख्या इतनी है लेकिन पधों की संख्या ४६१६ ही है ।

Publishing URL: http://www.researchreviewonline.com/issues/volume-5-issue-72-apr-2019/RRJ000061

ISSN : 2321- 4708
Apr 2019, Year - 5 (72)
Paper ID : RRJ000061

यह सूक्तिसंग्रह इसकी विपुलता एवं बृहत्ता के कारण ही नहीं विषयसंकलन की विशिष्टता के कारण भी यह प्रख्यात है, इसमें विषयों का समावेश हुआ है जैसे कि इस ग्रन्थ में कविने शान्तरस एवं योगशास्त्र का विस्तार से विवरण किया है ।

प्रसन्न – साहित्यरत्नाकर :

प्रस्तुत ग्रन्थ के कर्ता पण्डितनन्दन है । हरप्रसादशास्त्री की 'नेपालग्रन्थ सूचि' अनुसार प्रस्तुत ग्रन्थ की एक प्रत नेपाल के प्रख्यात वीर पुस्तकालय में विधमान है । प्रस्तुत ग्रन्थ में श्लोक या सुभाषितों की संख्या १४२८ है । पण्डित नन्दनने प्रसन्न साहित्यरत्नाकर में ४८० पधं वैसे ही संकलित किये है जो २४५ पधं 'सुभाषितरत्नकोश' एवं 'सदुक्तिकर्णामृत' में सम्मिलित रूप में विधमान है ।

प्रस्तावरत्नाकर :

प्रस्तुत ग्रन्थ के कर्ता कवि हरिदास है, इस कवि का समय ई.स. ११५७ है । इस ग्रन्थ में प्राचीन एवं अर्वाचीन पधों का संग्रह है ।

सूक्तिमालिका :

'सूक्तिमालिका' के कर्ता पण्डित तारोजी है । इस ग्रन्थ में ८ पद्धतियां है एवं श्लोक संख्या १००० से भी अधिक है, जिसमें २३८ श्लोक दशावतार वर्णन के हैं ।

विधाधरसहस्रकार :

इस ग्रन्थ का कर्ता विधाधर है । इस ग्रन्थ की समाप्ति होने से पहले ही विधाधरमिश्र का निधन होने से, यह अपूर्ण ग्रन्थ को मिथिलावासी ज्योतिर्विद महोदय ने पूर्ण किया है । इस ग्रन्ग में १३० कवियों के १००० पधों का संग्रह है, जिसमें प्रायः अन्योक्ति पधं भी है ।

'सूक्तिमुक्तावली' में जल्हण कविने १४२ पद्धतियों में विविध विषयों में विविध कवियों के पधों का संग्रह किया है । जल्हणने प्रथम 'अनुक्रमणिकाप्रकरण' में अपने कुल का वर्णन किया है, फिर 'नमस्कारः' नामक प्रथम पद्धति में नान्दीस्तवन के रूप में प्रथम १९ पधं में शिव की स्तुति की है और शिव के अलग-अलग विषय जैसे कि हास्यताण्डवम् हरस्य ललाटलोचनम्, हरजटा, पार्वती, गजानन, हरि ब्रह्मा और सरस्वती की स्तुति करते हुए पधों को चूना है ।

सदुक्तिकर्णामृत की तरह जल्हण ने भी यहाँ ग्रन्थ के प्रारम्भ में देवता की स्तुति करके नान्दी की स्थापना की है । जल्हण कवि ने नमस्कार पद्धति के बाद सामान्यकविप्रशंसा और विशेष कवि काव्यप्रशंसा पद्धति को लिया है । सूक्तिमुक्तावली के विषयों को निम्नानुसार विभाजित कर सकते है

१) देवता अर्चन की पद्धतियां
२) दशावतार की पद्धतियां
३) प्रकृति तत्त्वों की पद्धति
४) नायक और नायिका प्रकार की पद्धतियां
५) ऋतुवर्णन

Publishing URL: http://www.researchreviewonline.com/issues/volume-5-issue-72-apr-2019/RRJ000061

ISSN : 2321- 4708
Apr 2019, Year - 5 (72)
Paper ID : RRJ000061

६) चाटूक्तियाँ
७) राजस्तुति की पद्धतियाँ
८) मानवस्वभाव की पद्धतियाँ

इन पद्धतियों में जल्हण कविने अचल, अद्भुतपुण्य, अनङ्गभीम, अनङ्गहर्ष, अभिनन्द, अमरु, कुमारदास, कुमुद, कृष्णमिश्र, गुणेश्वर, राजशेखर, भवभूति, भारवि और क्षेमेन्द्र जैसे कवियों के पद्यों का भी चयन किया है ।

इस पद्यों में भारतीय जनजीवन एवं समाज का वास्तविक चित्रण है जो संस्कृत साहित्य की उपलब्ध प्रशिष्ट काव्य परम्परा में यह कम मिलता है ।

सूक्तिरत्नहार :

'सूक्तिरत्नहार' के कर्ता का नाम कलिङ्गराय है, जो १४ वीं शताब्दी उत्तरार्ध में हुए थे । कलिङ्गराज महाराजा कुलशेखर के राज्यमंत्री रहे होंगे क्योंकि इस ग्रन्थ की पुष्पिका में कलिङ्गरायने लिखा है कि –

इस ग्रन्थ मे २०२ पद्धतियाँ है जिसमें कविने अभिनवगुप्त, अमरुक, अमृतवर्धनः और पुरन्दर, मनुः, माधव जैसे ५७ कवियों के पद्य का संग्रह किया है । ग्रन्थ के आरम्भ में नमस्कारपद्धति और आशीवर्चन पद्धति से देवस्तुति करके ग्रन्थ की निर्विघ्न समाप्ति के लिए मंङ्गलाचरण किया है । सूक्तिरत्नहार के विषयों को इस तरह विभाजित किया जा सकता है –

१) नान्दीस्तवनपद्धतियाँ
२) दानपद्धतियाँ
३) राजा–राज्य विषय की पद्धतियाँ
४) नायक–नायिका प्रकार की पद्धतियाँ
५) षट्ऋतुवर्णनपद्धतियाँ
६) मानवस्वभावपद्धतियाँ

कलिङ्गराय का विषयनिरूपण उत्तम प्रकार का है – यथा नान्दी स्तवनरूप में नमस्कारपद्धति मुख्य है, बाद में आशीर्वाद, वेदप्रशंसा, ब्राह्मणप्रशंसा, सृष्टिक्रम, धर्म–अधर्म की पद्धतियाँ है । दूसरी दान विषयक पद्धति में कलिङ्गराय ने दानप्रशंसा, अन्नदान, जलदान, भूमिदान, तिलदान, विधादान और सुवर्णदान जैसे पद्यों का संग्रह किया है ।

Publishing URL: http://www.researchreviewonline.com/issues/volume-5-issue-72-apr-2019/RRJ000061